प्रातः क्लास 3-6-68 Om Shanti पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। पंछी भी फिरते हैं सभी को रिफ्रेश करते हैं। तुम भी स्वदर्शनचक्रधारी हो बैठते हो तो बहुत रिफ्रेश करते हो। अगर स्वदर्शनचक्रधारी हो बैठते हो तो। स्वदर्शनचक्रधारी का अर्थ भी कोई समझते नहीं हैं तो उनको समझाना चाहिए। न समझेंगे तो चक्रवर्ती राजा नहीं बनेंगे। स्वदर्शनचक्रधारी को निश्चय होगा हम चक्रवर्ती राजा बनने लिए स्वदर्शनचक्रधारी बने हैं। कृष्ण को भी चक्र दिखाते हैं। अकेले को भी देते हैं। स्वदर्शनचक्र को भी समझना है। जरूर तब ही चक्रवर्ती राजा बनेंगे। बात तो बहुत सहज है। बाबा स्वदर्शनचक्रधारी बनने में कितना समय लगेगा। बच्चे एक सेकण्ड। फिर तुम बनते हो विष्णु वंशी। देवताओं को विष्णु वंशी ही कहेंगे। विष्णु वंशी बनने लिए पहले तो जरूर शिव वंशी बनना है। फिर शिव बाबा बैठ स्वदर्शनचक्रधारी बनाते हैं। अक्षर तो बहुत सहज है। हम नई विश्व के स्वदर्शनचक्रधारी सूर्यवंशी बनते हैं। सूर्यवंशी है ही नईदुनिया की। हम नई दुनिया के मालिक चक्रवर्ती राजा बनते हैं। स्वदर्शनचक्रधारी विष्णु वंशी बनने में एक सेकण्ड लगता है। बनाने वाला है शिव बाबा। शिव ही विष्णु वंशी बनाते हैं। और कोई बना न सके। यह तो बच्चे जानते हैं विष्णु वंशी होते हैं सतयुग में। यहां नहीं। यह है विष्णुवंशी बनने का युग। तुम यहां आते ही हो विष्णु वंशी में आने लिए। जिसको हो सूर्यवंशी कहते हो। ज्ञान सूर्यवंशी। अक्षर बहुत अच्छा है। विष्णु होता ही है सतयुग का मालिक। उसमें ल०ना० दोनों ही हैं। यहां बच्चे आये हैं ल०ना० अथवा विष्णु वंशी बनने लिए। इसमें खुशी भी बहुत होती है। नई दुनिया नये विश्व में गोल्डेन एज विश्व में विष्णु वंशी बनना है। इन से ऊंच पद और कोई है नहीं। इसमें तो बहुत ही खुशी होनी चाहिए। प्रदर्शनी में तुम समझाते हो तुम्हारा एमआबजेक्ट ही यह है। बोलो यह बहुत बड़ी युनिवर्सिटी है। इसको कहा जाता है रूहानी स्प्रीचुअल युनिवर्सिटी। एमआबजेक्ट इस चित्र में है। बच्चों को यह बुद्धि में रखना चाहिए कैसे लिखे जो बच्चों को समझाने में एक सेकण्ड लगे। तुम ही समझा सकते हो। इनमें भी इन में भी लिखा हुआ है हम विष्णुवंशी देवी देवता थे जरूर अर्थात देवी देवता कुल के थे। स्वर्ग के मालिक थे। बाप समझाते हैं मीठे2 बच्चे भारत में तुम आज से 5000 वर्ष पहले सूर्यवंशी देवी देवतायें थे। बच्चों को अभी बुधि में आया है। शिव बाबा बच्चों को कहते हैं हे बच्चे सतयुग में तुम सूर्यवंशी थे। बच्चों को अभी बुधि में आया है। शिव बाबा आया था सूर्यवंशी घराणा स्थापन करने। बेहद बरोबर भारत स्वर्ग था। बाप समझाते हैं हे बच्चों आज से सूर्यवंशी ल०ना० का भारत में राज्य था। यही पूज्य थे। पूजारी कोई भी नहीं थे। पूजा की कोई सामग्री नहीं थी। इन शास्त्रों में ही पूजा आद की रसम रिवाज रखी हुई है। यह है सामग्री। तो बेहद का बाप शिव बाबा बैठ समझाते हैं। वही ज्ञान का सागर है। मनुष्य सृष्टि का बीज रूप है। उनको वृक्षपति भी कहते हैं। वृक्षपति की दशा ऊंच से ऊंच होती है। वृक्षपति तुमको समझा सिखला रहे हैं। तुम पूज्य देवी देवतायें थे फिर पुजारी बने हो जब रावण राज्य शुरू हुआ है। देवतायें ही वाममार्ग में विकारी बने हैं। देवतायें निर्विकारी थे। फिर वह कहां गये। जरूर पुनर्जन्म लेते2 विकारी बने हैं। एक एक अक्षर नोट करना चाहिए। दिल पर या कागज पर। यह कौन समझाते हैं ? शिव बाबा। वही स्वर्ग रचते हैं। शिव बाबा ही स्वर्ग का वर्सा देते हैं। और कोई बाप विगर दे न सके। लौकिक बाप तो है देहधारी। तुम अपने को आत्मा समझ पारलौकिक बाप को याद करते हो। बाबा। बाबा फिर रेसपान्ड करते हैं हे बच्चों। तो बेहद का हो गया ना। बच्चों तुम सूर्यवंशी देवी देवता थे फिर तुम पुनर्जन्म ले पुजारी बने हो। यह है ही रावण राज्य। हर वर्ष रावण को जलाते हैं। फिर भी मरता ही नहीं। 12 मास फिर रावण को जलावेंगे। गोया सिध कर बतलाते हैं हम सभी रावण सम्प्रदाय के हैं। रावण अर्थात 5 विकारों का राज्य कायम है। हम रावण के बस हैं। अर्थात भ्रष्टाचारी हैं। गवर्मेन्ट खुद कहती है यह भ्रष्टाचारी राज्य है। सतयुग में श्रेष्टाचारी राज्य था। अभी कलियुगी पुरानी दुनिया भ्रष्टाचारी दुनिया है। यह चक्र फिरता रहता है। अभी तुम प्रजापिता ब्रह्मा वंशी संगमयुग पर बैठे हो। तुम्हारी बुधि में है हम ब्राह्मण हैं। अभी शुद्र कुल

के नहीं हैं। कलियुगी मनुष्यों को कहा जाता है शुद्र। बु शुद्र बुधि। इस समय है आसुरी राज्य। गवर्मेन्ट में राजा रानी जरूर चाहिए। नहीं तो कहा जाता है पंचायती राज्य। भल प्राईम मिनिस्टर है उनको भी राय देने वाला बहुत हैं। अभी तो टूकड़े2 हो गये हैं। हरियाना अलग पंजाब अलग। पहले एक था प्रजीडेन्ट अभी तो अलग हो गये हैं। उनका फिर वजीर मिला। चीफवजीर दूसरे अवजीर। क्योंकि उनको राय देने वाला जरूर चाहिए कि कहां भूल न हो जाये। जब इन ल०ना० का सूर्यवंशी राज्य था वहां तो इनको किसी प्रकार की राय देने की दरकार ही नहीं। बाप तुमको सूर्यवंशी बना रहे हैं। राय लेते हैं बेवकूफ। क्योंकि उनमें अपना अकल नहीं होता हैं। इसलिए राय लेते हैं। जैसे उस ने कहा कि हमारा गुरु नन्दा है। हम उनकी मत पर चलेंगे। तो गोया अपनी मत नहीं हैं तो कहेंगे मूर्ख मत। जब कि उनकी मत पर चलना है तो उनको क्यों नहीं चीफ बनाते। परन्तु तमोप्रधान बुधि है ना। तो अकल कुछ नहीं हैं। बाप को कहते हैं दुःख हर्ता-सुख कर्ता। अभी सुख कहां हैं। सतयुग में। दुःख कहां है? कलियुग में। बाप दुःख हर्ता सुख कर्ता कब आवेंगा? जरूर कलियुग के अन्त सतयुग आदि के संगम पर आवेंगा। दुःख हर्ता सुखकर्ता है ही शिव बाबा। वह वर्सा देते ही हैं सुख का। सतयुग को सुखधाम कहा जाता हैं। वहां दुःख का नाम नहीं। तुम्हारी आयु भी बड़ी होती है। रोने की दरकार ही नहीं। समय पर एक पुराना खोल छोड़ दूसरी लेते हैं। समझते हैं अभी शरीर बूढ़ा हुआ है। पहले बच्चा सतोप्रधानी होता हैं। इसलिए सन्यासी बच्चों को ब्रह्मज्ञानी से उंच समझते हैं। क्योंकि वह तो फिर भी विकारी गृहस्थियों से जन्म लेते हैं ना। कहेंगे हम फलाने के बच्चे हैं। छोटे बच्चे को तो यह भी पता नहीं रहता। इस समय सारी दुनिया में रावणराज्य भ्रष्टाचारी राज्य है। श्रेष्ठाचारी देवी देवताओं का राज्य सतयुग में थी। अभी नहीं हैं। फिर हिस्ट्री रिपीट होगी। श्रेष्ठाचारी कौन बनावे। यहां तो एक भी श्रेष्ठाचारी नहीं। यह है ही भ्रष्टाचारी पतित दुनिया। इसमें बड़ी बुधि चाहिए। पत्थर बुधि कुछ भी समझ नहीं सकती। जो समझते हैं वह समझ कर पारस बुधि बनते हैं। अभी है पत्थर बुधियों का अन्त। पारस बुधि का आदि। यह है ही पारस बुधि बनने का समय। बाप आकर 50 वर्ष में पत्थर बुधि से पारस बुधि बनाते हैं। कहा भी जाता है संग तारे कुसंग बोरे। सत बाप के सिवा बाकी दुनिया में है ही कुसंग। बाप कहते हैं मैं सम्पूर्ण निर्विकारी बना कर जाता हूं। फिर सम्पूर्ण विकारी बनाते हैं? कहते हैं हम क्या जाने। अरे निर्विकारी कौन बनाते हैं। जरूर बाप ही बनावेंगे। विकारी कौन हैं यह किसको पता नहीं हैं। बाप बैठ कर समझाते हैं। मनुष्य तो पत्थर बुधि इतने हैं जो कुछ भी नहीं हैं। रावण राज्य है ना। कोई का बाप मरता है पूछो कहां गया? कहेंगे स्वर्गवासी हुआ। अच्छा तो इसका नर्क में था ना। तो तुम भी नर्कवासी ठहरे। कितना सहज है समझाने की बात। कोई भी अपने को नर्कवासी समझते नहीं हैं। नर्क को वेश्यालय, स्वर्ग को शिवालय कहा जाता हैं। तुम जानते हो सारी दुनिया जो भी मनुष्य मात्र हैं इस समय सभी वेश्यालय में हैं। विकार से पैदा होते हैं। सतयुग को शिवालय कहा जाता है। शिवालय को कितना समय हुआ। आजसे 5000 वर्ष पहले इन देवी देवताओं का राज्य था। तुम विश्व के मालिक महाराजा महारानी थे। फिर पुनर्जन्म लेना पड़े। पुनर्जन्म सब से जास्ती तुम ने लिया है। उनके लिए ही गायन है। आत्माएं परमात्मा अलग रहे बहुकाल... तुमको याद है पहले2 तुम आदी सनातन देवी देव धर्म वाले ही आये फिर 84 पुनर्जन्म लेपतित बने हो। अभी फिर पावन बनना है। पुकारते भी है पतित-पावन... तो सर्टीफिकेट देते हैं एक ही पतित-पावन, सुप्रीम सदगुरु आकर पावन बनाते हैं। खुद कहते हैं मैं इसमें बैठ कर तुमको पावन बनाता हूं। बाकी 84 लाख योनियां आदि है नहीं। यह सभी गपोड़ा मारते हैं। है ही 84 जन्म। सतयुग में इतने... इन ल०ना० की प्रजा भी थी ना। अभी नहीं है। कहां गये? उनको भी 84 जन्म लेने पड़े। जो पहले नम्बर में आते हैं वही पूरे 84 जन्म लेते हैं। तो पहले2 उनको जानी चाहिए। देवी-देवताओं की वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी रीपीट होती है। सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी राज्य भ्रष्ट रिपीट। फिर बाप तुमको [illegible] बना

रहे हैं। तुम कहते हो हम भाई2हैं। इस पाठशाला वा युनिवर्सिटी में जहां हम नर से नारायण बनते हैं। हमारा एमआबजेक्ट भी यह है। जो अच्छी रीति पुरुषार्थ करेंगे वह पास होंगे। जो पुरुषार्थ नहीं करेंगेतो कोई प्रजा में बहुत शाहुकार बनते हैं। कोई कम। यहराजधानी बन रही हैं। तुम जानते हो हम श्रीमत श्रेष्ठ बन रहे हैं। श्री श्री शिव बाबा की मत पर श्री लक्ष्मी-नारायण वा देवी देवता बनते हैं। श्री माना श्रेष्ठ। अभी किसको श्री कह नहीं सकते। परन्तु यहां तो जो आवेगा उनको कह देंगे श्री। श्री फलाना ... अभी श्री तो सिवाय देवी-देवताओं के कोई बन नहीं सकता। भारत श्रेष्ठ तें श्रेष्ठ था। रावण राज्य में भारत की महिमा को खलास कर दी हैं। भारत की महिमा भी बहुत हैतो निन्दा भी बहुत है। भारत बिलकुल धनवान था अभी बिल्कुल कंगाल बना हैं। देवताओं के आगे जाकर उन्हों की महिमा गाते हैं। हम निर्गुण हारे में ... आपे ही तरस परोई .. देवताओं को कहते हैं परन्तु कोई रहम दिल थोड़े ही थे। रहम दिल तो एक बाप को ही कहा जाता जो मनुष्यसे देवता बनाते हैं। अभी तुम्हारा वह बाप भी है टीचर भी है, सदगुरु भी हैं। गारन्टी करते हैं मेरे को याद करने से तुम्हारे जन्म जन्मान्तर के पाप भस्म होंगे। और साथ भी ले जाऊंगा। फिर तुमको नई दुनिया में जाना हैं। यह 5000 वर्ष का चक्र है। नई दुनिया थी सो जरूर बनेगी। दुनिया पतित होगी फिरबाप आकर पावनबनावेंगे। बाप कहते हैं पतित रावण बनाते हैं। पावन मैं बनाता हूं। बाकी तो यह जैसे गुड्डियों की पूजा करते रहते हैं। इनको यह भी पता नहींरावण को दस सीस कैसे दिखाते हैं। विष्णु को भी 4 भुजादेते हैं। परन्तु ऐसा कोई मनुष्य थोड़े ही होता हैं। अगर 4 भुजा वाला मनुष्य होता तो उन से जो भुजा पैदा होता वह भी ऐसा ही होना चाहिए। यहां तो सभी को दो भुजायें हैं। कुछ भी जानते नहीं। भक्ति मार्ग के शास्त्र कंठ कर लेते हैं। इन्हों के भी कितने फालोअर्स बन जाते हैं। कमाल है। यह तो बाप ज्ञान की अथार्टी हैं। कोई मनुष्य ज्ञान के अथार्टी हो न सके। ज्ञान का सागर तुम मुझे ही कहते हो। आलमाईटी अथार्टी यहबाप की महिमा हैं। तुम बाप को याद करते हो तो बाप से ताकत लेते हो। तुम विश्व के मालिक बन जाते हो। तुम समझते हो हमारे में बहुत ताकत थी। हम निर्विकारी थे। सारे विश्व पर अकेले राज्य करते थे। तो आलमाईटी कहेंगे ना। यह लक्ष्मी-नारायण सारे विश्व के मालिक थे ना। यह माईट इन्हों को कहा से मिली? बाप से। ऊंचते ऊंच भगवान हैं ना। कितना सहज समझाते हैं। यह 84 के चक्र तो बहुत ही सहज है। जिन्हों को तुमको बादशाही मिलती हैं। पतित को विश्व की बादशाही मिल न सके। पतित तो इनके आगे झुकते समझते हैं हम भक्त हैं। पावन के आगे माथा टकते हैं। क्योंकि खुद ही पतित है तब तो गंगा पर जाकर धोने जाते हैं। पतित को कब गुरु नहीं किया जाता हैं। भक्ति मार्ग में भी आधाकल्प चलता है अभी तुमको भगवान मिला है। भगवानुवाच मैं तुमको राजयोग सिखाता हूं। भक्ति का फलदेने आया हूं। गाते भी हैं भगवान किस ने किस रूप में आवेंगा। बाप तो कहते हैं मैं तो कोई बैले गधे आद में थोड़े ही आऊंगा। जो ऊंच ते ऊंच था फिर 84 जन्म पूरे किये हैं उन में ही आता हूं। उत्तम पुरुष होते हैं सतयुग में। कलियुग में है कनिष्ट तमोप्रधान। अभी तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हो। बाप ही आकर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं। यहखेल है। उनको अगर समझेंगे नहीं तो स्वर्ग में कब आवेंगे नहीं।

यह सृष्टि चक्र फिरता रहता है। यह कोई भी मनुष्य नहीं जानते। जनावर भी नहीं जानते तो बाकी मनुष्य वा काम के ठहरे। वह भी जैसे कि जनावर ही ठहरे। इसलिए उनको बन्दर सम्प्रदाय कहते हैं। बाप समझाते हैं बच्चे तुम बन्दर थे। बन्दर कीसेना है है ना रावणपर जीत पाने लिए। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते

,::::*